Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
July to September 2024, E-Journal, Vol. I, Issue XLVII, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

समाज में महिलाओं के नवीन उभरते आयाम एवं प्रतिमान का समिक्षात्मक अध्ययन

डॉ. अशोक कुमार खोरवाल*

* सहायक आचार्य (समाजशास्त्र) राजकीय महाविद्यालय, आहोर (जालोर) (राज.) भारत

शोध सारांश – महिलाओं एंव उनके अवकाश के विभिन्न पहलुओं के नवीन उभरते प्रतिमानों कि चर्चा कि गई है। अवकाश के विभिन्न आयामों कि महिलाओं में एक सामाजिक परिवर्तन के रूप में देखा जाता है। अवकाश एंव सामाजिक वर्ग को विभेदित किया गया है आधुनिक और परम्परागत तौर पर महिलाएं अवकाश को किस प्रकार व्यतीत करती है, जहां कामकाजी आधुनिक महिलाएं कामकाज के अलावा अवकाश के क्षणों में विभिन्न प्रकार की गतिविधियों को करती हैं उन्ही गतिविधियों का विश्लेषण किया हैं। आधुनिक कामकाजी महिलाएं में अवकाश के समय में अपना अधिकतर समय सोशल मीडिया की गतिविधियों को पसन्द करती है। वही परम्परागत महिलाएं अपना अवकाश का समय परम्परागत कार्य जैसे पूजा पाठ, धार्मिक कार्य, साफ सफाई, बच्चों का पालन पोषण जैसे कार्य करना पसन्द करती है अवकाश के विभिन्न आयामों में महिलाओं कि प्रस्थिति और विभिन्न प्रतिमानों का अध्ययन किया गया है।

शब्द कुंजी – अवकाश, कामकाजी महिलाएं, सामाजिक परिवर्तन, महिला आरक्षण, सामाजिक वर्ग, जेंडर, प्रतिमान।

अवकाश के नवीन आयाम : दुनिया भर में जहा भी श्रेष्ठतम शिक्षा दी जाती है। वहा शैक्षिक अवकाश एक प्रकार की अनिवार्यता है वहा शिक्षकों और छात्रो के अवकाश के कारण न तो गुणवता प्रभावित हुई और न कार्य सस्कृति नष्ट हुई हमारे देश में शिक्षा एक ऐसी व्यवस्था है जिसमे अध्यापक सबसे निरोह प्राणी है उसी पर प्रशासन शासन समाज यहॉ तक कि शैक्षिक संस्थाए निर्भर करती है अध्यापकों के लिए सम्मान और सहानुभूति का जो संस्कार किसी जमाने में था उसमें उसकी समाज में बौद्धिक प्रतिष्ठा थी आरोप लगाए जाते है कि इस प्रतिष्ठा को खुद अध्यापक ने ही नष्ट किया है उसका अध्ययन विमुख होना उसका अध्यापन के ईमानदार न होना और गैर शैक्षिक कार्यो में कभी सरकारी स्तर पर तो कभी निजी कारोबार के कारण व्यस्त रहना अध्यापकीय प्रतिष्ठा के पतन का प्रमुख आरोप हैं क्या यह सच हैं।

अध्यापक चाहे प्राथमिक स्कूल का हो या विश्वविद्यालय का, उसे अवकाश विहिन करने की शिक्षा नीतियों और निर्देशों ने उसका मानसिक धरातल कर दिया आज से चालीस पचास साल पहले कोई नही कहता था कि अवकाशो के कारण कोर्स पूरा नही हुआ पढाई नही होती कार्य संस्कृति का विघटन हुआ या अध्यापक कामचोर और अध्ययन अध्यापन से विमुख हुआ। बिना कोचिंग कक्षाओं महगें निजी फीस, फैशन वाले स्कूल कॉलेज विश्वविद्यालयों के भी सरकारी संस्थाओं में अच्छी पढाई होती थी। जो अंग्रेजी और गणित आज समस्या वाले विषय है वे उस जमाने में कभी ऐसा नही थे। उस जमाने के हाई स्कूल पास आज भी अंग्रेजी और गणित के अच्छे शिक्षण हैं, अच्छे कर्मचारी और अच्छे अधिकारी माने जाते है। फिर ऐसा क्या हुआ ,क्यो हुआ कि 200 दिन का शैक्षिक सत्र बनाने, सेमेस्टर सिस्टम लाने, अध्यापकों को अवकाश रहित करने बार-बार प्रशिक्षण रिफ्रेशर का उन्मुखीकरण कोर्स देने के बावजूद आज न तो वैसा स्तर है, न वैसा समर्पण और न वैसी कार्य संस्कृति है।

अवकाश के विभिन्न उभरते प्रतिमान : अध्यापक को अवकाश विहिन करने के पीछे इरादा यह है कि उसे सदा व्यस्त रखो और ऐसे काम देते रहो, जिससे उसका मनोबल और आत्मविश्वास ही समाप्त हो, वह केवल एक आज्ञाकारी सेवक बन जाए। कभी विधानसभा लोकसभा से लेकर पंचायत,नगर निगम आदि के प्रश्नो के जवाब एकत्रित करने वाला चलित मजदूर बन जाए, तो कभी जिला, संभाग और राज्य के शिक्षा विभाग या कलेक्टरेट का कर्मचारी बन कर यहॉ बाबुगिरी करता रहे। अध्यापक की स्वतंत्रता आप शिक्षा से स्वतंत्रता का संस्कार कैसे दे सकते है। अध्यापक को आत्म विश्वासहीन करके आप भावी पीढी में विश्वास कैसे पैदा कर सकते है ऐसे कई प्रश्न है। अवकाश है क्या अवकाश अध्यापक की आरामगाह नही है। यह उसके चिंतन,मनन, विचार और अध्ययन का एकांत तरीका है। उसकी शिक्षा के प्रति कुछ नया खोजने या सोचने की जगह है। साथ ही उन जिम्मेदारियों की जगह है जो उसे परिवार और समाज में रह कर अवकाशकाल में ही निभानी होती है। उसका अवकाश छीन कर हम उसे कार्य दिवसों के प्रति बेईमान बना देते है। वह अपनी घरेलू या सामाजिक जिम्मेदारीयों के लिए जब कार्य दिवसों का इस्तेमाल करता है तो पढाई प्रभावित होती है, वह बार-बार छुट्टी लेकर तरीकों से गायब होकर अपना अवकाश खुद पैदा करने लगता है। ऐसे अवैध अवकाशों के कारण वह कामचोर बेईमान और कर्तव्य भ्रष्ट कहलाने लगता है। ऐसा क्यो क्या नीतिकार और शासन-प्रशासक विचार करगें। वास्तव में अवकाश के प्रकार से सत्र भर की थकान से थोड़ी राहत का समय और दोनो है। क्या अवकाश काल में उसे तरह तरह के सर्वे पकडा कर सेमेस्टरों की परीक्षाएं करवा कर, सेमिनार या बौद्धिक उत्थान कर पाते है। क्या हर सचमुच उसका विषय-उन्नयन या बौद्धिक उत्थान कर पाते हैं क्या हर समय परीक्षा लेते रहने,

कॉपीयाँ जाचते रहने या छोटे–छोटे सेमिनार–वर्कशॉप में जाने का एक विकल्प यह नही हो सकता कि हम उसे अवकाश काल में घर या बाहर रह कर संस्था से अलग हट कर कुछ सोचने का मौका दें। उसे नए शैक्षिक प्रयोगों, नवाचारों, अनुभवों और उपलब्धियों की पुस्तकें देकर अपनी समीक्षा देने का काम क्यों नही किया जा सकता अवकाश काल में कुछ नया सोचने या करने के लिए उसकी इच्छा जानने का कोई प्रपत्र क्यो नही भरवाया जाता है छात्र–छात्राओं से हर सत्र या सेमेस्टर कैसा चाहते है सेमेस्टर प्रणाली क्या वार्षिक परीक्षा प्रणाली का बेहतर विकसित हैं क्या मासिक या परीक्षा टेस्ट लेकर परीक्षा का आतंक रचना उचित हैं क्या अवकाश में विश्वविद्यालय कॉलेज और स्कूलों को एक साथ बैठा कर विषय के उन्नतया नय ज्ञान के उन्मुखीकरण की एक वार्षिक योजना तैयार नही की जा सकती क्या समाज और सरकार के साथ कर अध्यापक अपनी शैक्षिक शक्ति का उपयोग करके संस्था को संसाधन संपन्न बनाने, श्रेष्ठ बनाने का कार्य नही बना सकते। विषय विशेषज्ञ अध्यापको के समक्ष वाली जटिलताओं को कैसे सरल किया जाए, क्या इस विषय में उनका प्रबोधन नही कर सकते। अवकाश का मतलब अपने काम से छुट्टी नही बल्कि अवकाश में किसी नए काम की खोज करना हैं अध्यापक को अधिक प्रभावशाली बना सके। वह उस आगामी सत्र या अवकाश के बाद सोचे गए काम को तैयार भी है। जब शिक्षक के अवकाश पर प्रशासन अपने काम की तुलना शिक्षक के काम से कर रहा है अवकाशों से शिक्षक के अवकाश की तुलना कर शिक्षक के अवकाशों से ईष्या कर रहा है या अपनी कम छुट्टियों ज्यादा छुट्टियों से प्रतिशोध ले रहा है। अवकाश से शिक्षक कोई सत्र भर की थकान उतार कर आराम करना ना चाहता बल्कि वह अपने अन्य कामो को निपटा कर दिवसो को अधिक कार्यशील बनाना चाहता है।

शिक्षक प्रति प्रशासको का का मनोविज्ञान यहॉ तक हेड मास्टर, प्राचार्य, अध्यापक, उपनिरीक्षक से लेकर सर्वोच्च अधिकारी तक किसी भी शिक्षक का कभी भी सार्वजनिक रूप से या दफतर में अपमान देना अपने कर्तव्य और अनुशासन का हिस्सा मानता यह मनोविज्ञान बदलना होगा। एक शिक्षक या प्राध्यापक अवकाश में दैनिक रूटिन की परंपरागत जडता से मुक्त भी होता अध्यापकों के लिए अनेक प्रकार की जडताए है। प्रवेश पाठ्यक्रम, पाठ्यपुस्तक, परीक्षाएं ये ऐसे काम है। आज तक स्कूल विश्वविद्यालय तक ऐसा पाठ्यक्रमबना ही नही कि शिक्षक आनंद बन सके, जिज्ञासा बन सके, आत्मप्रेरित अनुसंधान प्रयोग या नवाचार बन सके। निजी स्कूलों में उच्च स्तर नाम पर केवल उची कमाई का फीस उघोग है।

महिला आरक्षण और सामाजिक परिवर्तन : महिला आरक्षण बिल का लाया जाना एक बहुत ही सकारात्मक कदम है,यह भारत के सांस्कृतिक और सामाजिक बदलाव में एक अहम भूमिका निभाएगा, राजनीति एक ऐसा क्षेत्र है जो किसी को भी नेतृत्व की क्षमता देने के साथ–साथ निर्णय देने की क्षमता भी प्रदान करता महिलाओं के विकास में अभी सबसे बडी बाधा यही है। कि उनके पास निर्णय लेने की क्षमता नही है। इस बदलाव की अपेक्षा बहुत पहले से की जा रही देर से ही सही, मगर प्रथम पडाव तो पुरा हुआ है, राजनीतिक स्तर पर आगे कौन से परिवर्तन होंगे और क्या निर्णय लिये जायेगें,यह कहना सहज नही होता, लेकिन यह सरकार का एक अभूतपूर्व निर्णय है और हर राजनीतिक दल को मतभेदों को भुलाकर इसका स्वागत करना चाहिए, राजनीति में नेतृत्व क्षमता उत्पन्न करने का प्रथम चरण पंचायती राज है हमारें सामने एक जीवंत उदाहरण है कि जब तक पंचायती रात में महिलाओं के लिए आरक्षण लागू नही हुआ था,तब तक यह कल्पना भी नही हो सकती थी कि महिलाए राजनीति में प्रवेश कर सकती है पुरूष सत्तात्मक समाज के लिए यह एक बडी चुनौती बनकर उभरा है, क्योकि महिलाओं को राजनीति के लिए पूर्णत: अक्षम माना जाता रहा हैं, यह धारणा तब गलत सिद्ध की यद्यपि सामाजिक परिर्वतन एक द्रुत गति से होने वाली प्रक्रिया नही है, और इसलिए यदि ये परिवर्तन वैधानिक स्तर पर लिए जाते है,तभी उनकी गति तीव्र हो पाती है, पंचायती राज के दौर में जब महिला आरक्षण का निर्णय लिया गया था, तब भी समाज में यह स्वीकारोक्ति सहज नही थी, और आज भी स्थिति में बदलाव बहुत धीमे–धीमे ही हो रहा है समाजशास्त्री के नाते से मैं यह बात बहुत विश्वास से कह सकता हूँ कि अभी भी प्रधान पद पर आसीन लगभग 70 प्रतिशत से ज्यादा महिलाओं के निर्णय में उनके पति, पिता या भाई जैसे घर के पुरूष सदस्यों की भूमिका अहम होती है। इसी प्रकार वर्तमान परिप्रेक्ष्य में भी देखा जाए तो महिला आरक्षण को लेकर एक नकारात्मक दृष्टिकोण उभरेगा क्योकि यह माना जाता है कि महिलाएं नेतृत्व करने के लिए नहीं बनी हैं लेकिन दुनिया भर में हुए शोध बताते हैं कि महिलाओं ने जहा भी निर्णय करने का अधिकार लिया हैं वहा एक समावेशी और निरंतर विकास हुआ है और उनका मानवाधिकार का पक्ष भी पुरूषों की अपेक्षा अधिक गहरा रहा है।

वर्तमान परिदृष्य : अवकाश एवं जेंडर : महिलाओं के लिए अवकाश का अवलोकन 1980 में किया गया। जब विभिन्न स्रोतों के आधार पर पर जेंडर के प्रभाव के बारे में जानकारी एवं अवकाश गतिविधियाँ विशेष रूप से उन स्रोतों पर ध्यान केंद्रित करता है जो कि गुणात्मक अध्ययन था इस अध्ययन मे अवकाश के दिनों को ध्यान में रखते हुए, यह न केवल अवकाश अध्ययन में काम से बल्कि इसके द्वारा भी सूचित किया जाता है कि परिवार के समाजशास्त्र के क्षेत्रों में अनुभवजन्य अनुसंधान, रोजगार और प्रजाति और सांस्कृतिक अध्ययन को भी शामिल किया गया है यहां उपयोग किया गया ढांचा कुछ विश्लेषण को सक्षम करने के लिए डिजाइन किया गया है महिलाओं के जीवन के तरीकों और आर्थिक और सामाजिक संदर्भ महिलाओं का अवकाश विभिन्न प्रकार से अनुभव किया जाता है।

अवकाश के प्रतिमान : वर्तमान में परस्पर संबंधित सामग्री और वैचारिक कारक जैसे कि आय पर सीधा और अवलोकनीय प्रभाव पड़ता है अवकाश के बारे में महिलाओं की पसंद दूसरों के पास कम प्रत्यक्ष है स्पष्ट प्रभाव लेकिन कोई भी महत्वपूर्ण नहीं है, जैसे महिलाओं की यह धारणा कि वे कहाँ सहज महसूस करती हैं व्यवहार में ये संरचना तत्व बहुत निकटता से जुड़े हुए हैं विश्लेषण में आसानी का मतलब है कि शुरू में उनके साथ वैसा ही व्यवहार किया जाता है।

अवकाश और सामाजिक वर्ग : सामाजिक विकास से जुड़ी परेशानियो के बावजूद महिलाओं के लिए वर्ग वर्गीकरण महिलाओं के अवकाश के अनुभव हैं वर्ग आधार पर विभेदित अधिकांश कामकाजी वर्ग की महिलाओं के पास है अवकाश के अनुभव जो अधिकांश अनुभवों से काफी भिन्न होते हैं वर्ग सीमाओं के किसी भी धुंधलेपन के बावजूद मध्यम वर्ग की महिलाएँ होती है। क्लार्क और क्रिचर ने महिलाओं मे अवकाश मध्यम वर्ग की महिलाओं का रुझान कुल मिलाकर अधिक होता है अवसर कामकाजी वर्ग की महिलाओं की भागीदारी दर कम है केवल घर से बाहर की गतिविधियाँ जिसमें नियमित रूप से मध्यवर्गीय महिलाओं की तुलना में अधिक कामकाजी महिलाएं हैं। शराब पीना, सिनेमाघरों में उपस्थिति, थिएटर और संगीत कार्यक्रम मुख्यत:

मध्यम वर्ग के हैं।

इस प्रकार भोजन के लिए बाहर जाना एक अवकाश गतिविधि हो सकती है सभी सामाजिक वर्गों में आम हैं भोजन, रेस्टोरेंट आदि के प्रकारों में महत्वपूर्ण अंतर समूह शामिल हैं। महिलाओं का अवकाश कामकाजी वर्ग की महिलाओं के लिए अवकाश बार-बार मिलता है विस्तारित पारिवारिक नेटवर्क विशेषकर अन्य के इर्द-गिर्द घूमता है महिला परिवार के सदस्य जबकि कामकाजी और मध्यम वर्ग दोनों महिलाओं ने बताया कि वे खाली समय रिश्तेदारों से मिलने काम करने में व्यतीत करती हैं। वर्ग की महिलाओं के ऐसा अधिक बार करने की संभावना अधिक होती है क्योंकि उनके अपने रिश्तेदारों के आस-पास रहने की अधिक संभावना है। भौगोलिक रूप से अधिक गतिशील मध्यम वर्ग की संभावना कम है भागीदारी और सामाजिक नेटवर्क में अंतर के अलावा, शेफील्ड सर्वेक्षण भी अधिक खर्च करने की क्षमता पर प्रकाश डालते है मध्यवर्गीय महिलाओं के अंतर को ध्यान में रखते हुए भी घरों के भीतर धन का बँटवारा जबकि सामाजिक वर्ग नहीं कर सकता यदि इसे केवल आय के साथ जोड़ा जाए तो स्पष्ट रूप से एक सह संबंध है दोनों के बीच में आय संरचना चरों में से केवल एक है अवकाश का जहां सामाजिक वर्ग का शक्तिशाली प्रभाव होता है। दौड़, रोजगार, श्रम का लैंगिक विभाजन के चरण है। पारिवारिक जीवन चक्र सभी विभाजन हैं जो सामाजिक के साथ अंत:क्रिया करते हैं यहां तक कि ऐसे कारक भी जो सैद्धांतिक रूप से सभी महिलाओं को प्रभावित करते हैं, जैसे व्यक्तिगत सुरक्षा, सामाजिक वर्ग द्वारा विभेदित होती है तो मध्य वर्ग की महिलाएँ आय स्तर और अवकाश भागीदारी के बीच संबंध दोनों में उभरने वाले सबसे महत्वपूर्ण सहसंबंधों में से एक है। श्रम का लैंगिक विभाजन और संबंधित श्रम बाजार असमानताएँ महिलाओं की पुरुषों पर आर्थिक निर्भरता को प्रोत्साहित करती हैं, और पुरुषों के लिए 'पारिवारिक वेतन' के लिए वेतन-सौदेबाजी ने मान लिया है आय, परिवारों के भीतर धन का वास्तविक वितरण कर सकती है महिलाओं के अवकाश के लिए अधिक महत्वपूर्ण निहितार्थ हैं। पहल के अनुसार घरेलू इकाइयों की राजनीतिक अर्थव्यवस्था पर एक साथ शोध सामुदायिक अध्ययन और परिवार के समाजशास्त्रीय विश्लेषण के साथ सभी ने आय और शक्ति के बीच संबंध का संकेत दिया है। घरेलू संसाधनों का नियंत्रण काफी हद तक यह निर्धारित कर सकता है कि कैसे महिलाएं अपना खाली समय बिता सकती हैं। खासकर जहां उनके पास समय नहीं है पहल ने पाया कि पत्नियाँ कम पैसे खर्च करती हैं अपने पतियों की तुलना में अवकाश विशेषकर निम्न आय वर्ग में अवकाश उन क्षेत्रों में से एक है जहां खर्च में कटौती की जाती है। क्योंकि आमतौर पर महिलाओं का अवकाश माना जाता है। घरों में तुलनात्मक रूप से कम प्राथमिकता, किसी भी प्रकार का खर्च महिलाओं का अवकाश अक्सर अर्थव्यवस्था का पहला क्षेत्र होता है जबकि पुरुषों का व्यक्तिगत तौर पर कुछ पैसों पर अधिकार बनाए रखने की अधिक संभावना है अवकाश व्यय उन घरों में जो कमाने वाले पुरुष की व्यय पर निर्भर हैं यह एक महिला के लिए अवकाश तक पहुंच से इनकार करना मुश्किल नहीं है किसी भी स्तर के खर्च की आवश्यकता होती है। वेतन पर पुरुष के स्वामित्व को प्रभावी ढंग से रोकने के लिए उसे ऐसे अवकाश की सुविधा के लिए पैसे मांगने से बचना चाहिए। उम्र बढ़ने की प्रक्रिया में शारीरिक स्वास्थ्य में गिरावट शामिल हो सकती है और गतिशीलता क्षीण हो सकती है बुजुर्ग विशेष पात्र हैं महिलाओं के अवकाश की किसी भी चर्चा में विचार मेसन का 1988 का एक महत्वपूर्ण लेख बुजुर्ग महिलाएं पर हैं जहां अवकाश के बहुत कम प्रावधान होते हैं बच्चों वाली विवाहित महिलाएँ या बढ़ते परिवारों वाली महिलाएँ अलगाव, तलाक और पुनर्विवाह में वृद्धि के बावजूद एकल माता-पिता वाले परिवारों की बढ़ती संख्या और विचारणीय पारंपरिक रूप से परिवारों से बाहर रहने वाली महिलाओं की संख्या पारिवारिक जीवन चक्र की प्रमुख परिभाषा है। अवकाश का प्रावधान उन युवाओं के लिए है जिनके पास है तुलनात्मक रूप से कम वित्तीय प्रतिबद्धताएँ और वैतनिक कार्य में कुछ प्रयोज्य आय फिर भी कई सार्वजनिक जिन अवकाश स्थलों पर युवा लोग अक्सर जाते हैं उन पर पुरुषों का नियंत्रण होता है और युवा महिलाओं का अधिकांश अवकाश उनके द्वारा निर्धारित होता है।

महिलाओं की स्थिति में सामाजिक परिवर्तन : इस अध्याय मे अवकाश, महिलाओं और जेंडर के बारे में है ये तीनों विषय महत्वपूर्ण हैं पश्चिमी संस्कृतियों में अवकाश एक अपेक्षाकृत वर्तमान अवधारणा है, जबकि एशिया में लोग सदियों पहले अवकाश के लिए प्रतीकों का उपयोग करते थे जबकि प्राचीन यूनानी दार्शनिकों ने भी सांस्कृतिक चर्चा की अवकाश का आदर्श पहली शताब्दी ई.पू. में ही शुरू हो गया था। कई लोगों के जीवन को आकार देते थे महिला और गैर-कुलीन अन्य जिनके श्रम ने इस अवकाश को संभव बनाया। अवकाश का अध्ययन बीसवीं सदी की घटना है। अभी तक 1980 के दशक तक महिलाओं और अवकाश के विषय पर अधिकतर चर्चा नहीं की गई थी। परन्तु इक्कीसवीं सदी में भी इसे एक केंद्रित विश्लेषण मानते हैं। अवकाश, महिलाएँ और जेंडर अन्वेषण के लिए एक महत्वपूर्ण क्षेत्र बने हुए हैं। महिलाओं के जीवन और समझ में कई लाभ हुए हैं कई देशों में है विभिन्न पहलुओं में महिलाओं के विरूद्ध भेदभाव करने के लिए कानून पारित किए गए अवकाश अंतराल शब्द उनकी खोज के कारण है कि जिस प्रकार वेतन अंतर है कार्यस्थल पर पुरुषों और महिलाओं के बीच, एक सामान्य अवकाश अंतर है इस अध्याय मे न केवल महिलाओं और पुरुषों के बीच उपलब्ध समय की मात्रा में कुछ अंतर हैं।

होशचाइल्ड और माचुंग (1989) ने अवकाश पर सुझाव दिया था विभिन्न प्रकार के अंतराल अवकाश का महत्व महिलाओं में भी मौजूद है। जो महिलाएं गरीब हैं उनके लिए उदाहरण के लिए, लाभकारी रूप से नियोजित महिलाओं की तुलना में अलग-अलग अवकाश अंतराल का सामना करना पड़ सकता है खेल, मनोरंजन और अवकाश में जैसा कि इस अध्याय मे दर्शाते हैं। जेंडर संबंधपरक है इसका निर्माण और पुनर्निर्माण किया जाता है व्यक्तियों के साथ संबंध और बातचीत समाज, संस्कृति और इतिहास। अवकाश न केवल प्रजनन के लिए, बल्कि लिंग के प्रतिरोध और परिवर्तन के लिए भी एक स्थान प्रदान करता है सभी पुरुषों और महिलाओं का जीवन जेंडर आधारित है, लेकिन इससे परे, वे प्रजाति वर्ग और सांस्कृतिक आधार पर भी भेदभाव किया जाता है इसलिए जबकि हम कई महिलाओं के बीच समानताएं हैं और महिलाओं और पुरुषों के बीच, हम विविधता और अंतर देखते हैं असमानता के रूप में हमारा तर्क है कि सभी व्यक्तियों को अवसर मिलना चाहिए इस अध्याय का उद्देश्य अनुसंधान का आलोचनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करके और भविष्य के लिए दिशा-निर्देश प्रस्तावित करके इन कई मुद्दों की जांच करना है। अवकाश, महिलाओं और जेंडर का अध्ययन पृष्ठभूमि और संदर्भ व्यक्तिगत जीवन, सामाजिक संदर्भों में जीवन, शक्ति, संस्कृति और राजनीति के निर्धारित करता है। अवकाश, महिलाओं और जेंडर की चर्चा साथ ही इसे स्वीकार करते हुए धारणाएँ जो उन विचारों को रेखांकित करती हैं। आज लड़कियों और महिलाओं के जीवन पर चर्चा के माध्यम से का प्रतिच्छेदन

अवकाश, जेंडर और संस्कृति, लिंग संबंधों की केंद्रीयता और भिन्न अवकाश के बारे में सोचने के तरीके है लड़कियों और महिलाओं का आज का जीवन और ऐसे तरीके हैं जिनसे जेंडर लड़कियों और महिलाओं में अंतर है जीवन और अवकाश का लैंगिक समानता की दिशा में प्रगति का दस्तावेजीकरण करना और उसकी निगरानी करना। इस उद्देश्य से सामाजिक नीति और कार्रवाई को बढ़ावा दिया गया। राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर महिलाओं के जीवन में सुधार होगा। अवकाश, महिलाएँ और जेंडर लैंगिक समानता के अन्य सूचकांकों के आंकड़े भी मिश्रित तस्वीर पेश करते हैं आय असमानता सभी महिलाओं को समान रूप से प्रभावित नहीं करती है और इस बात के पर्याप्त तथ्य हैं कि सशक्त महिलाएं और विकलांग महिलाएं दुनिया में जहां भी वे रहते हैं, उन्हें आय भेदभाव की उच्च दर का सामना करना पड़ता है। उदाहरण के लिए कनाडा में आदिवासी महिलाएँ और दृश्यमान अल्पसंख्यक महिलाएँ श्वेत विरासत की महिलाओं की तुलना में उनकी आय कम है लैंगिक समानता का एक और चल रहा मुद्दा स्वास्थ्य का है। महिलाओं पर औसत पुरुषों की तुलना में अधिक जीवन प्रत्याशा होती है लेकिन महिलाओं की तुलना में अधिक होती है एक बड़ी चिंता का विषय है कई महिलाओं को पर्याप्त प्रजनन या प्रसव पूर्व देखभाल संयुक्त राष्ट्र, 2006 अनुसार नहीं मिलती है, जो उनकी प्रजनन पसंद उनके स्वास्थ्य और उनके बच्चों के स्वास्थ्य को खतरे में डालती है। दुनिया में कुछ लोगों को इसे प्रगति और महिलाओं के स्वास्थ्य के लिए वरदान के रूप में देखा जा सकता है अपर्याप्त रूप से अध्ययन किए गए महिलाओं के शरीर का तेजी से चिकित्साकरण हो रहा है। इन बायोमेडिकल प्रक्रियाओं में, और महिलाओं पर दबाव बढ़ रहा है अवकाश महिलाये और जेंडर बच्चों वाली नौकरीपेशा महिलाएं हमेशा काम करती हैं। घर-परिवार के जेंडर आधारित वितरण में तुलनात्मक रूप से बहुत कम परिवर्तन पारिवारिक जिम्मेदारिया सरकारी सामाजिक नीतियां भी हैं सामाजिक और सामुदायिक सेवाओं जैसे की आवश्यकता के साथ तालमेल नहीं रखा गया मातृत्व और पारिवारिक अवकाश का प्रावधान सुलभ बाल देखभाल इन सेवाओं की कमी न केवल के कुछ क्षेत्रों है लड़कियों और महिलाओं की राजनीतिक स्थिति में अनेक विरोधाभास यह राष्ट्रीय लैंगिक समानता के कुछ मुद्दों का संक्षिप्त अवलोकन है अवकाश महिलाओं और जेंडर की चर्चा के लिए स्पष्ट रूप से इसकी प्रासंगिकता है हम इस अध्याय के माध्यम से इसमें संलग्न हैं। समाज में अवकाश की अवधारणा कोल्टर 1999 अवकाश की अंतर्निहितता और असंभवता पर प्रकाश डालता है अवकाश को रोजमर्रा की जिंदगी के व्यक्तिगत, सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और राजनीतिक घटकों से अलग करता है। साथ ही गरीबी, नस्लवाद, विषमलैंगिकता, उम्रवाद और सक्षमवाद से मुक्ति और इनसे उत्पन्न होने वाली हिंसा और तनाव सभी अवसरों को प्रभावित करते हैं। अवकाश और जो लड़कियों के बीच विविधता और असमानताओं के प्रति संवेदनशील है महिलाओं और लड़कियों को रोजमर्रा की जिंदगी के संबंध में जिन चुनौतियों का सामना करना पड़ता है अवकाश का अनुभव विभिन्न स्तरों पर होता है। व्यक्तिगत स्तर पर महिलाएँ और लड़कियों को भेदभाव और उत्पीड़न का सामना करना पड़ सकता है। कार्यस्थल पर स्कूल में, समुदाय में और अवकाश में जातिवाद, लिंगवाद, और विषमलैंगिकता, साथ ही विकलांगता के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण को रोका जा सकता है अवकाश में भागीदारी को सीमित करना और अवकाश के माध्यम से व्यक्तियों की आत्म-अभिव्यक्ति और सकारात्मक पहचान के विकास की स्वतंत्रता को भी सीमित कर सकता है। और लड़कियों के लिए एक स्त्रीतत्व के अनुरूप होने के दबाव से संबंधित बढ़ती समस्या का प्रमाण है जो बहुत कम आदर्श बनाती है। महिलाएं और पुरुष अलग-अलग जीवन स्थितियों में इन अनुभवों को समझना परिवर्तन के लिए एक महत्वपूर्ण प्रोत्साहन हो सकता है। यह केवल व्यक्तिगत स्तर पर अनुभव और परिवर्तन पर ध्यान केंद्रित करने तक सीमित है। सामाजिक संदर्भों और सांस्कृतिक कारकों के प्रभाव को भी ध्यान में रखना कभी-कभी व्यक्तिगत स्तर की समझ का पता लगाने की प्रवृत्ति होती है समस्या व्यक्ति के भीतर होती है और व्यक्ति को इसके लिए प्रोत्साहित करती है व्यक्तियों को अपने अवकाश के संदर्भ में कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है जीवन संदर्भों से उत्पन्न होते हैं अवसरों को बढ़ा सकता है अवकाश और आत्म-विकास के लिए, वे कठिन, तनावपूर्ण और हो सकते हैं घर में या उनके रोजमर्रा के जीवन में अवकाश, विश्राम के लिए पड़ोस-आधारित अवसर हो सकते हैं या नहीं भी हो सकते हैं और सामाजिक सम्बंद्ध किसी भी मामले में सामाजिक संदर्भ का महत्व पता चलता है। पारस्परिक अंत:क्रियाओं की विविधता को बेहतर ढंग से समझने की आवश्यकता है विभिन्न अवकाश परिवेशों में होने वाली वार्ताएं सामाजिक संदर्भों पर विचार करना भी शोधकर्त्ताओं के लिए केंद्रीय विषय रहा है अवकाश के अर्थ और अवकाश प्रथाओं को समझने के बारे में चिंतित और अवकाश क्षेत्र में लैंगिक समानता की दिशा में काम करना है।

शक्ति, संस्कृति, विचारधाराओं और प्रवचन की धारणाओं को एक साथ लाकर एक व्यापक अवकाश की राजनीति पर परिप्रेक्ष्य संभव है जो अतिरिक्त प्रदान करता है उन तरीकों की अंतर्दृष्टि जिनसे अवकाश में असमानताओं को पुन: उत्पन्न किया जाता है और उनका विरोध किया जाता है सामाजिक विचारधाराएं अवकाश नीतियों को कैसे प्रभावित करती हैं, और ये नीतियां कैसे प्रभावित करती हैं अवसरों और भागीदारी को प्रभावित करती है विचारधाराएं कैसे प्रभावित करती हैं अवकाश दूसरा तरीका विभिन्न मीडिया का विश्लेषण करना है। दस्तावेज के लिए फिल्में, वीडियो गेम, फैशन शो, समाचार पत्र, पत्रिकाएँ आदि जिसमें अवकाश अभ्यास खेल सामाजिक विचारधाराओं को प्रभावित कर सकते हैं।

निष्कर्ष – इस लेख में निष्कर्ष यह निकलता है कि अवकाश का उपयोग अपनी जरूरत के हिसाब से कर लेते है। जहां सरकारी योजनाओं के तहत अवकाश का मामला आता है जैसे चाइल्ड केयर लीव, जैसे अवकाशों पर अभी मंथन होना चाहिये। परिस्थिति के अनुसार इसका प्रयोग किस प्रकार किया जाना है। कहीं सरकारी तंत्रों में इस अवकाश का सही प्रयोग हो रहा है या इसे अपना अधिकार समझना, इस तरह के मामलों को समझना अभी शेष है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. किम्मेल, एम.एस. (2004), द जेंडरड सोसाइटी न्यूयॉर्क, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
2. लिओनेट, सी. एडं क्लार्क, एम (2009,) अनसोशियल आवर्स अनसोशियल फैमिलीज, वर्किंग टाइम एडं फॅमिली वेल बीइंग, कैंब्रिज, यूके रिलेशनशिप फाउंडेशन।
3. युलिंगर, जे. (1974), द साइकोलोजी ऑफ लेजर स्प्रिंगफील्ड, चार्ल्स थॉमस।
4. रोजेक, सी. (1989), लेजर टाइम एडं लेजर स्पेस लेजर फॉर लेजर

क्रिटिक्ल एसे, लन्दन यूके मैकमिलन।
5. रोजेक, सी. (1995), टू इनस्ट दिसेंटिंग लेजर , लन्दन यूके सेज।
6. साव, एस. एम. (2001), कॉसेप्टुलाइजिंग रेजिस्टेंस :वुमेन्स लेजर एज पोलिटिकल प्रैक्टिक्स ,जर्नल ऑफ लेजर रिसर्च।
7. साव, एस. एम. (2008), फेमिली लेजर एडं चेंजिंग आइडियोलोजिस ऑफ पेरेन्टहूड सोशियोलोजी कैम्पस।
8. स्केज्स, बी (1999), मेटर ऑफ प्लेस विजिबिलिटी एडं सेक्सुलिटीज इन लेजर स्पेस, लेजर स्टडी।
9. स्टैटिक्स कनाडा. (2006), वुमेन इन कनाडा ओटावा, ओन सोशल एडं एबओरिजन स्टैटिक्स डिविजन, स्टैटिक्स कनाडा।
10. सुल्लिवन, ओ. (2004), चंजिंग जेंडर प्रैक्टिस् विथहिम द हाउसहोल्ड, ए थिओरटीकल पर्सपेक्टिव, जेंडर एडं सोसाइटी।
11. तुआन, वाई. (1977), स्पेस एडं प्लेस द पर्सपेक्टिव ऑफ एक्सपीरिएंस मिन्नेपोलिस, यूनिवर्सिटी ऑफ मिन्नेसोटा प्रेस।
12. यूनाइटेड नेशन (2006), द वर्ल्डस वुमेन्स 2005 प्रोग्रेस इन स्टैटिक्स न्यूयॉर्क, इकोनोमिक एडं सोशल अफेयर ,यूनाइटेड नेशन।
13. वेअरिंग, बी (1998), लेजर एडं फेमिनिस्ट थ्योरी, थाउजेंड ओक्स सेज।
14. वेस्ट, सी. एडं जिम्मेरमेंन, डी एच. (1991), डूइंग जेंडर इन जे, लोर्बेर एडं. एस. ए फेरेल, द सोशल कंस्ट्रक्शन ऑफ जेंडर, न्यूबरी पार्क सेज।
15. विम्बुस, इ. एडं टालबोट, एम. (1998), रिलेटिव फ्रीडम्स वुमेन एडं लेजर मिल्टन कीन्स, यूके ओपन यूनिवर्सिटी प्रेस।
16. जुजानेक, जे. (2004), वर्क, लेजर, टाइम प्रेशर, एडं स्ट्रेस इन जे.टी. होवोर्थ एडं ए.जे. वील वर्क एडं लेजर वेस्ट सुसेक्स, यूके।

****